यूपी विधानसभा चुनावः 2022

सामाजिक न्याय की राजनीति
का टेस्ट होना बाकी है

एच.एल. दुसाध

यूपी विधानसभा चुनाव : 2022

सामाजिक न्याय की राजनीति
का टेस्ट होना बाकी है!

एच. एल. दुसाध

दुसाध प्रकाशन
लखनऊ

प्रथम संस्करण : 2022

ISBN : 978-81-87618-94-2

प्रकाशक : **दुसाध प्रकाशन**
डाइवर्सिटी हाउस, 2/1467,
आदिल नगर, कल्याणपुर, लखनऊ-226022
E-mail : hl.dusadh@gmail.com
मो. : 9654816191
© लेखक

मूल्य : 400.00 रुपये

रचना : यूपी विधानसभा चुनाव : 2022
लेखक : एच. एल. दुसाध
शब्दांकन : कम्प्यूटेक सिस्टम, शाहदरा, दिल्ली-32
आवरण : शिवम सागर
मुद्रक : क्विक ऑफसेट, दिल्ली-110094

समर्पण

बहुजन मूव्हमेंट की चर्चित शख्सियत
***इंजी. हरिकेश्वर राम** साहब*
को सादर समर्पित!

अनुक्रम

भूमिका	7
लेखकीय : चुनावों पर मेरी एक और किताब!	11
विधानसभा चुनाव 2022 : कैसे हो हेट पॉलिटिक्स की काट!	23
शिखर को छूती सापेक्षिक वंचना के सद्व्यवहार में व्यर्थ : विपक्ष	28
हिंदुत्ववादी शिक्षानीति की काट के लिए : एजुकेशन डाइवर्सिटी बने विपक्ष का मुद्दा!	33
स्वामी प्रसाद मौर्य के इस्तीफे के मायने	38
लोकतंत्र को जिन्दा रखना है तो लागू करनी होगीः शक्ति के समस्त स्रोतों में सामाजिक और लैंगिक विविधता!	42
महिलाओं को आर्थिक रूप से पुरुषों के बराबर आने में लगेंगे 257 साल!	47
विकास नहीं, भागीदारी को मिले तरजीह!	51
समानुपातिक भागीदारी से भारत बन	55
सकता हैः दक्षिण अफ्रिका!	55
5 राज्यों के चुनाव के आइने में 73वें गणतंत्र दिवस पर संकल्प!	58
विनिवेश में प्राथमिकता मिले गैर-हिंदू उद्यमियों को!	62
समानुपातिक भागीदारी पर सपा केन्द्रित करे अपना घोषणापत्र!	70
सामाजिक अन्यायमुक्त भारत निर्माण का सपना देने में व्यर्थ : अखिलेश यादव!	75
क्या भाजपा के शक्ति के स्रोतों से अनजान हैं : अखिलेश और उनके सलाहकार!	79
क्या सलोन की जनता देश को नयी राह दिखाएगी!	83
कांग्रेस ने फिर खुद को साबित किया : बहुजनों का वर्ग-मित्र!	87

गुलामी से मुक्ति नहीं बना चुनावी मुद्दा!	91
बहुजनों के वर्ग शत्रु : यादव या कोई और!	95
साधु-संतः हिन्दुओं का सबसे बड़ा बहुजन विरोधी तबका!	107
खांटी भाजपा विरोधी के रूप में उतीर्ण होने में व्यर्थः यूपी के गैर-भाजपाई दल!	112
बसपा के पुनरुद्धार के तीन उपाय!	118
जरूरी है बसपा और सपा का विकल्प ढूँढना!	122
2022 : सामाजिक न्याय की राजनीति का टेस्ट होना बाकी है!	128
बाकी है अभी : सामाजिक न्याय की निर्दिष्ट परिभाषा!	141
गुलामी के प्रतीकों की मुक्ति का आन्दोलन!	147

भूमिका

–स्वदेश कुमार सिन्हा

पूरे भारत में डाइवर्सिटी मैन ऑफ इंडिया के रूप में विख्यात एच एल दुसाध आज किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं। केवल ग्यारहवीं कक्षा तक स्कूली शिक्षा प्राप्त करने के बावजूद इन्होंने दो दशकों के बीच करीब-करीब 85 पुस्तकों का लेखन किया है। दुसाध जी द्वारा लिखित ढेरों साहित्य पढ़ने के बाद मुझे यह एहसास हुआ कि डॉ. अम्बेडकर के बाद वे अकेले हिन्दी पट्टी के दलित चिंतक हैं, जिन्हें अर्थशास्त्र की गहरी समझ है। केवल आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक विषयों पर ही नहीं, उनकी सिनेमा, साहित्य और खेलों पर भी गहन समझदारी है। जब वे खेलों पर ; विशेष रूप से क्रिकेट या टेनिस पर लिखते हैं, तो लगता है कि वे बड़े खेल पत्रकार हैं। सिनेमा पर भी इन्होंने बेजोड़ और बेहतरीन लेखन किया है। इनकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उनमें जड़ता और रूढ़िवादिता नहीं है। ये किसी भी विचार को हमेशा अपनाने के लिए तैयार रहते हैं, जो देश की अस्सी प्रतिशत बहुजन आबादी के हित में हो। चाहे वह अम्बेडकरवाद हो, गांधीवाद या मार्क्सवाद हो, सबकी ये आलोचनात्मक व्याख्या करते हैं तथा उनमें से जो बहुजन समाज के हित में लगता है, उसे अपनाते हैं।

इस संबंध में मुझे महात्मा गौतम बुद्ध का यह कथन हमेशा याद आता है– किसी चीज़ या विचार को केवल इसलिए न मानो कि वह तुम्हारे गुरु या वरिष्ठ लोग कहते हैं या परम्परा से हम ऐसा मानते आए हैं या किसी पवित्र धर्मग्रंथ में ऐसा लिखा है। तुम हर विचार को अपनी बुद्धि और विवेक पर कसो और जो विचार सम्पूर्ण मानवता के लिए हितकारी हो, उसे जीवन में अपनाओ और लागू करो। कार्ल मार्क्स ने अपने घोषणा पत्र में लिखा है'; दार्शनिकों ने दुनिया की बहुविधि व्याख्या की है, लेकिन जरूरत है इसे बदलने की'! दुसाध जी की प्रस्तुत पुस्तक 'यूपी विधानसभा चुनाव 2022 : सामाजिक न्याय की राजनीति का टेस्ट होना बाकी है' भी उनकी अन्य पुस्तकों की तरह दुनिया को बदलने की मुहिम का ही एक हिस्सा है। उत्तर प्रदेश

विधानसभा चुनाव 2022 पर केन्द्रित इस पुस्तक का मैटर उन्होंने यूपी विधानसभा चुनाव को ध्यान में रखते हुए 1 जनवरी 2022 से शुरू किया था, जो मई 2022 में पूरा हुआ। इस पुस्तक में उनके उस दौर में छपे विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं, अखबारों तथा वेवसाइटस् के लेखों संकलन है और साथ ही विभिन्न यूट्यूब चैनलों पर दिए गए साक्षात्कारों का उल्लेख भी है।

2019 में संघ-परिवार की राजनैतिक इकाई द्वारा केन्द्र में सत्ता पर काबिज़ होने के बाद 2022 में पांच राज्यों में हुए विधानसभा चुनाव, जिनमें सबसे महत्वपूर्ण उत्तर प्रदेश का चुनाव रहा। इस चुनाव ने न केवल उत्तर प्रदेश की राजनीति को बल्कि पूरे देश में दलित-पिछड़े बहुजन समाज की राजनीति को गहराई से प्रभावित किया।इसका कारण यह है कि उत्तर प्रदेश लगातार संघ परिवार की राजनीति की प्रयोगशाला बना रहा है। दूसरा, सबसे बड़ा कारण यह था कि यहाँ पर भाजपा का मुकाबला सपा-बसपा जैसी उन राजनैतिक ताकतों से था, जो अपने को सामाजिक न्याय की लड़ाई का चैम्पियन मानते हैं। हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि 6 दिसम्बर 1992 में उत्तर प्रदेश के अयोध्या में हिन्दू अतिवादी तत्वों द्वारा बाबरी मस्जिद विध्वंस में बहुजन समाज के लोगों की बड़ी भागीदारी थी। दुसाध जी ने अपनी इस पुस्तक में अनेक लेखों में यह बतलाया है कि भाजपा द्वारा एक राष्ट्र का प्रोजेक्ट मूलतः ब्राह्मणवाद की पुनर्स्थापना ही है, जिसका सबसे अधिक दुष्परिणाम बहुजन समाज को ही उठाना पड़ेगा, लेकिन फिर भी दलित-पिछड़े और जनजाति समाज के लोग भाजपा के पीछे क्यों हैं? इस पुस्तक में वे अपने अनेक लेखों में इस प्रश्न का हल तलाशने की कोशिश करते हैं।

उत्तर प्रदेश में सपा-बसपा जैसी सामाजिक न्याय के लिए प्रतिबद्ध पार्टियों में व्यापक बिखराव तथा बहुजन मुद्दों पर ढुलमुल रवैए को अपनाना वे इसका बड़ा कारण मानते हैं। जहाँ एक ओर उत्तर प्रदेश में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और अमित शाह खुलकर साम्प्रदायिक राजनीति कर रहे थे, वहीं दूसरी ओर सपा-बसपा जैसी पार्टियाँ इस नफ़रती प्रचार की काट नहीं निकाल पाईं। पुस्तक में अपने ही लेख 'विधानसभा चुनाव 2022 : कैसे हो हेट पॉलिटिक्स की काट' में लिखते हैं कि वर्ग संघर्ष के सिद्धांतकार कार्ल मार्क्स ने कहा था कि दुनिया का इतिहास वर्ग संघर्ष का इतिहास है। एक वर्ग वह है, जिसका उत्पादन के साधनों पर कब्जा है। दूसरा वह है, जो इससे बहिष्कृत व वंचित हैं। इन उभय वर्गों में कभी समझौता नहीं हो सकता। इनके मध्य सतत संघर्ष जारी रहता है।कलकत्ता की अनुशीलन समिति, जिसमें गैर सवर्णों का प्रवेश निषिद्ध था, के सदस्य रहे डॉ. हेडगेवार के समय में जब पूरा भारत अंग्रेजों को वर्ग शत्रु मानते हुए, उनसे भारत को मुक्त कराने में संघर्षरत थाः डॉ. हेडगेवार ने एकाधिक कारणों से मुसलमानों के रूप में एक नया वर्ग शत्रु खड़ा करने की परिकल्पना की। उन्हें अपनी परिकल्पना को रूप देने का आधार 1923 में

प्रकाशित विनायक दामोदर सावरकर की पुस्तक 'हिन्दुत्वः हिन्दू कौन?' में मिला, जिसमें उन्होंने अपने सपनों के भारत निर्माण के लिए अंग्रेजों की जगह मुसलमानों को प्रधान शत्रु चिह्नित करते हुए, उनके विरुद्ध जाति-पाति का भेदभाव भुलाकर सवर्ण-अवर्ण सभी हिन्दुओं को 'हिन्दू- वर्ग' (सम्प्रदाय) में उभारने का बलिष्ठ प्रयास किया था।

लेखक का मानना है कि भाजपा की सारी राजनीति का केन्द्र बिन्दु भविष्य में भी यही रहेगा।1990 में मंडल कमीशन की रिपोर्ट लागू होने के बाद भाजपा ने बड़े पैमाने पर साधु-संतों को आगे करके राम-मन्दिर आंदोलन करवाया। बाबरी मस्जिद विध्वंस के बाद लम्बे समय से चल रहे मुकदमे का अंत करके प्रधानमंत्री ने खुद ही राम-मन्दिर का शिलान्यास किया। कश्मीर में धारा 370 का खात्मा, सीएए, एनपीआर, एनसीआर कानूनों के जरिए संघ परिवार इस बात को लोगों जेहन में बिठाने में सफल रहा कि प्रधानमंत्री ही हिन्दुओं के सबसे बड़े रक्षक हैं। आज विधानसभा चुनाव 2022 को दृष्टिगत रखते हुए एक बार फिर संघ के अनुषांगिक संगठनों, मीडिया, लेखक-पत्रकारों और साधु-संतों के सहयोग से भाजपा के रणनीतिकार हेट पॉलिटिक्स के सहारे पांच राज्यों, ख़ासकर यूपी और उत्तराखंड में राजनैतिक सफलता का एक नया अध्याय रचने में जुट गए हैं। प्रस्तुत लेख में लेखक अपनी तीक्ष्ण और पैनी दृष्टि के कारण यह भलीभाँति जान गए थे कि भाजपा की इस राजनीति का तोड़ तो विपक्षी दलों के पास फिलहाल नहीं है। एक अन्य लेख 'शिखर को छूती सामाजिक वंचना के सद्व्यवहार में व्यर्थ विपक्ष' भी इस पुस्तक का महत्वपूर्ण लेख है, इसमें लेखक का यह मानना है कि भाजपा के शासनकाल में भारी पैमाने पर असमानता और सामाजिक वंचना बढ़ी है। भाजपा के नफ़रत की राजनीति के ज़वाब में विपक्षी दल इस सामाजिक वंचना पर आँख मूँदे रहे, जिससे चुनाव में उसका लाभ नहीं मिल सका। 2014 में सत्ता में आने के बाद मोदी ने नरसिंहा राव की नवउदारवादी नीतियों का जबरदस्त अनुसरण करते हुए जो काम शुरू किया, उसका भयावह परिणाम 22 जनवरी 2018 में प्रकाशित आक्सफॉम की रिपोर्ट के जरिए सामने आया। उस रिपोर्ट से पता चला कि टॉप की एक प्रतिशत आबादी अर्थात एक करोड़ तीन लाख लोगों का वर्ष में सृजित धन-दौलत के 73% पर कब्जा हो गया है। शायद ही दुनिया में किसी परम्परागत सुविधाभोगी तबके की दौलत में एक साल में इतना इज़ाफ़ा हुआ होगा, किन्तु मोदी की सवर्णपरस्त नीतियों के कारण भारत में ऐसा चमत्कार हो गया। एक प्रतिशत टॉपवालों से आगे बढ़कर मोदीराज में देश की टॉप 10% आबादी; जिसमें 99% सवर्ण होंगे, का देश की धन-दौलत पर नब्बे प्रतिशत से ज्यादा कब्जा हो गया है, जिसे विषमता का शिखर कहना अतिशयोक्ति नहोगी।

सम्पूर्ण पुस्तक में लेखक ने चाहे वो शिक्षा का क्षेत्र हो, महिलाओं का सशक्तिकरण हो अथवा बहुजन समाज में बढ़ती हुई भयानक आर्थिक विषमता का है, इन सभी के निदान के लिए देश के सभी क्षेत्रों में बहुजन डाइवर्सिटी मिशन के दस

सूत्रीय एजेंडे को लागू करने की ज़ोरदार वकालत की है। उनका यह मानना है कि जब तक देश के वंचित तबकों को धन-दौलत में समान भागीदारी नहीं मिलेगी, तब तक फासीवादी ताकतें इसी तरह निरंतर शक्तिशाली होती रहेंगी। मुझे लगता है कि इन सब प्रश्नों के उत्तर को तलाशने के लेखक की यह बहुत ही महत्वपूर्ण पुस्तक है।

लेखकीय :

चुनावों पर मेरी एक और किताब!

मार्च 2007 मे वजूद में आया 'बहुजन डाइवर्सिटी मिशन' (बीडीएम) एक ऐसा संगठन है, जिसका लक्ष्य आर्थिक और सामाजिक विषमता का खात्मा है। चूँकि इस संगठन से जुड़े लोग यह मानते हैं कि आर्थिक और सामाजिक गैर- बराबरी ही मानव जाति की सबसे बड़ी समस्या है तथा इसकी उत्पत्ति लोगों के विभिन्न तबकों और उनकी महिलाओं के मध्य शक्ति के स्रोतों (आर्थिक, राजनीतिक, शैक्षिक और धार्मिक) के असमान बंटवारे से होती रही है, इसीलिए इसकी गतिविधियां मुख्यतः शक्ति के स्रोतों के विविध सामाजिक समूहों के मध्य वाजिब बंटवारे पर केन्द्रित रही है। चूँकि शक्ति के स्रोतों का वाजिब बंटवारा राजसत्ता द्वारा ही संभव है, इसलिए यह संगठन अपने जन्मकाल से ही प्रयास करता रहा है कि राजनीतिक पार्टियाँ अपने चुनावी मैनिफेस्टो में इसके दस सूत्रीय एजेंडे को जगह दें ताकि डाइवर्सिटी एजेंडे को अपने चुनावी घोषणापत्र में जगह देने वाली पार्टी जब सत्ता में आये तो उस पर इसे लागू करने के लिए लिए दबाव बनाया जा सके। कहना न होगा पार्टियों पर दबाव बनाने का अवसर तो नहीं मिला, पर, भाजपा-कांग्रेस से लगाये अधिकांश दलों ने बीडीएम के निम्न दस सूत्रीय एजेंडे को अपने चुनावी मैनिफेस्टो में जगह दियाः कई राज्य सरकारों ने इसके कुछ अंशों को लागू भी किया।

1-सेना व न्यायालयों सहित सरकारी और निजी क्षेत्र की सभी प्रकार नौकरियों तथा पौरोहित्य; 2- सरकारी और निजी क्षेत्रों द्वारा दी जाने वाली सभी वस्तुओं की डीलरशिप; 3- सरकारी और निजी क्षेत्रों द्वारा की जाने वाली खरीदारी; 4- सड़क-भवन निर्माण इत्यादि के ठेकों, पार्किंग, परिवहन; 5- सरकारी और निजी क्षेत्रों द्वारा चलाये जाने वाले छोटे-बड़े स्कूलों, विश्वविद्यालयों, तकनीकी-व्यवसायिक शिक्षण संस्थानों के संचालन, प्रवेश व अध्यापन; 6- सरकारी और निजी क्षेत्रों द्वारा अपनी नीतियों, उत्पादित वस्तुओं इत्यादि के विज्ञापन के मद में खर्च की जाने वाली धनराशि; 7- देश-विदेश की संस्थाओं द्वारा गैर-सरकारी संस्थाओं (एनजीओ) को दी जाने वाली धनराशि; 8- प्रिंट व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया एवं फिल्म के सभी प्रभागों; 9- रेल-राष्ट्रीय राजमार्गों की खाली पड़ी भूमि सहित तमाम सरकारी और मठों की जमीन व्यवसायिक

इस्तेमाल के लिए एससी/एसटी के मध्य वितरित हो एवं 10- ग्राम पंचायत, शहरी निकाय, संसद-विधानसभा, राज्यसभा की सीटों एवं केंद्र की कैबिनेट; विभिन्न मंत्रालयों के कार्यालयों, राष्ट्रपति- राज्यपाल, प्रधानमंत्री- मुख्यमंत्री के कार्यालयों इत्यादि के कार्यबल में लागू हो सामाजिक और लैंगिक विविधता!'

बहरहाल राजनीतिक दलों ने चुनावों में आर्थिक और सामाजिक विषमता के खात्मे को कितना तरजीह दिया तथा शक्ति के स्रोतों में विविधता लागू करने में कितना रूचि लिया, इसके आंकलन के लिए 2007 से ही बीडीएम की ओर से देश के राजनीति की दिशा तय करने वाले हिंदी पट्टी के यूपी और बिहार के विधानसभा तथा लोकसभा चुनावों पर किताबें लाने का जो प्रयास शुरू हुआ, वह अबतक जारी है। इस क्रम में मैंने बीडीएम की ओर से यूपी विधानसभा चुनाव 2007: सोशल इंजीनियरिंग का कमाल या कुछ और! (2007), सामाजिक न्याय के राजनीति की हार (2009), मुद्दाविहीनं चुनाव में डाइवर्सिटी (2009), लोकसभा चुनाव 2014: भारतीय लोकतंत्र के ध्वंस की दिशा में एक और कदम (2014), बिहार विधानसभा चुनाव 2015 : मंडल के लोगों ने फोड़ दिया कमंडल (2015), बहुजन राजनीति का पतन (2017), कैसे हो बहुजन राजनीति का पुनरुद्धार (2019), तेजस्वी यादवः बिहार विधानसभा चुनाव 2020 में एक नए महानायक का उदय(2020)जैसी किताबें तैयार किया। इस सिलसिले को आगे बढ़ाते हुए अब 'यूपी विधानसभा चुनाव 2022: सामाजिक न्याय की राजनीति का टेस्ट होना बाकी है' जैसी मेरी नई पुस्तक पाठकों के हाथ में है, जिसमें उत्तर प्रदेश में 2022 में अनुष्ठित विधानसभा चुनाव पर विस्तार से रोशनी डाली गयी है!

बहुजनवादी दलों को महीनों पहले किया आगाह

2022 में जो यूपी विधानसभा का चुनाव अनुष्ठित हुआ, उसके विषय में 14 दिसंबर, 2021 को फेसबुक पर निम्न पोस्ट के जरिये मैंने यूपी के बहुजनवादी दलों को आगाह करने का प्रयास किया था। *इस देश के परजीवी और जन्मजात सुविधाभोगी वर्ग के आशा और आकांक्षा की प्रतीक बन चुकी भाजपा अपने दो पारंपरिक अमोघ हथियारों- मुस्लिम विद्वेष का प्रसार और हिंदू धर्म-संस्कृति के गौरवगान- के सहारे देश के राजनीति की दिशा तय करने वाले यूपी विजय के लिए मैदान में कूद चूकि है। यही वो हथियार हैं जिसके सहारे भारत विजय कर मोदी ने वर्ग संघर्ष का खुला खेलते हुए शक्ति के समस्त स्रोत अपने चहेते परजीवी वर्ग के हाथ में सौपने में सारी शक्ति लगा कर बहुजनों को उस स्टेज में पहुंचा दिया है, जिस स्टेज में पहुंच कर सारी दुनिया में गुलामों को अपने मुक्ति की निर्णायक लडाई लड़नी पड़ी। यूपी विजय के प्लान के तहत ही अगस्त 2020 में सरकारी धन से राम मंदिर निर्माण का भूमि पूजन कराकर मोदी को नई सदी में हिंदू धर्म-संस्कृति के सबसे बड़े उद्धारक की छवि प्रदान करने*

के मुहिम की शुरुआत हुई। 13 दिसंबर, 2021 को नवनिर्मित काशी विश्वनाथ मंदिर का साडंबर लोकार्पण कराकर उस मुहिम को तुंग पर पहुंचाने का बलिष्ठ प्रयास हुआ है। इसीलिए 13 दिसंबर के बाद तमाम साधु संत, प्रायः समस्त हिंदू लेखक-पत्रकार और राष्ट्रवादी नेता मोदी को आधुनिक शंकराचार्य की छवि प्रदान करने के साथ मुस्लिम विद्वेष के प्रसार और हिंदू धर्म संस्कृति के जयगान में एक दूसरे से होड़ लगाने में जुट गए हैं। इसी का प्रतिबिंबन आज देश के सबसे बड़े अखबार दैनिक जागरण के संपादकीय पेज पर हुआ है, जिसका फोटो पोस्ट किया हूँ।

भाजपा के मुकाबले यूपी के चुनावी जंग में उतरे बहुजनों के नेता उस के अमोघ हथियार को लेकर लगता है जरा भी चिंतित नहीं हैं। इसलिए जिस हथियार के सहारे भाजपा यूपी विजय का विसात बिछा रही है, उसकी काट के लिए वे सही वैकल्पिक हथियार इस्तेमाल करने के बजाय महंगाई, बेरोजगारी, सांप्रदायिकता इत्यादि जैसे घिसे- पिटे हथियार इस्तेमाल करते नजर आ रहे हैं, जो अतीत की भाँति एक बार फिर इनकी गहरी शिकस्त का सबब बन सकता है। अगर बहुजनवादियों को यह लड़ाई जीतनी है तो चुनाव को उग्र सामाजिक न्याय पर केंद्रित करना होगा : बहुजनों के लिए नौकरियों से आगे बढ़कर उद्योग- व्यापार इत्यादि ए टू जेड में सर्वव्यापी आरक्षण दिलाने की विसात बिछानी होगी। इसके लिए सबसे आसान रास्ता है डाइवर्सिटी को चुनावी मुद्दा बनाना। एक मात्र डाइवर्सिटी में ही हिंदू धर्म के गुलाम मोदी भक्त बहुजनों को मुस्लिम विद्वेष और हिंदू धर्म संस्कृति के सम्मोहन से मुक्त करने का सामर्थ्य हैं। अगर बहुजनवादी दल यूपी चुनाव में डाइवर्सिटी को वरण करने में कोताही बरतते हैं तो भाजपा को शिकस्त देने के लिए उन्हें किसी चमत्कार पर ही निर्भर रहना होगा!

उम्मीद जगी 15 बनाम 85 की!

बहरहाल 2022 के विधानसभा चुनाव में भाजपा से पार पाने के लिए दिसंबर 2021 में चुनाव को उग्र सामाजिक न्याय तथा नौकरियों से आगे बढ़कर उद्योग- व्यापार इत्यादि सर्वव्यापी आरक्षण पर केन्द्रित करने का जो आह्वान किया, उसे जनवरी 2022 से अख़बारों और पोर्टलों इत्यादि में और जोर-शोर से उठाने लगा। इस क्रम में 1 जनवरी, 2022 को प्रकाशित आलेख *विधानसभा चुनाव 2022 : कैसे हो हेट पॉलिटिक्स की काट* बेहद खास रहा। इसी टोन में मैं 7 मार्च को चुनाव संपन्न होने पहले : 6 मार्च तक थोड़े-थोड़े अन्तराल पर लिखता और चैनलों पर बोलता रहा। खैर! हेट पॉलिटिक्स के जरिये देश के राजनीति की दिशा तय करने वाली यूपी में बहुत पहले से बढ़त बना चुकी भाजपा को पहली बार सबल चुनौती स्वामी प्रसाद मौर्य से मिली। 11 जनवरी को भाजपा छोड़ सपा में शामिल होते ही जिस तरह स्वामी

प्रसाद मौर्य ने चुनाव को 85 बनाम 15 पर केन्द्रित किया, उससे योगी आदित्यनाथ के 80 बनाम 20 के फार्मूले से बढ़त बनायीं भाजपा बराबरी पर आ गयी। तमाम राजनीतिक विश्लेषकों ने कहना शुरू किया कि यूपी में चुनाव अब 50-50 हो गया है। भाजपा छोड़कर सपा में शामिल हुए स्वामी प्रसाद मौर्य जिस तीखे अंदाज़ में सामाजिक न्याय की बात उठाना शुरू किया, उससे चुनाव सीधा भाजपा बनाम सपा हो गया और मुकाबले में बसपा और कांग्रेस काफी पीछे चली गईं। मौर्य के सपा ज्वाइन करने के बाद चुनावी फिजा में जो अचानक बदलाव आया, उसका अनुमान लगाते हुए अखिलेश यादव ने भी सोत्साह उनका स्वागत किया। उन्होंने ट्विट कर कहा, *सामाजिक न्याय और समता-समानता की लड़ाई लड़ने वाले स्वामी प्रसाद मौर्य जी एवं उनके साथ आने वाले अन्य सभी नेताओं, कार्यकर्ताओं और समर्थकों का सपा में ससम्मान स्वागत एवं अभिनन्दन। सामाजिक न्याय का इन्कलाब होगा- बाईस में बदलाव होगा। एक और ट्विट कर आगे की रणनीति का खुलासा किया, इस बार सभी शोषितों, वंचितों, उत्पीड़ितों, उपेक्षितों का 'मेल होगा' और भाजपा की बाटने व अपमान करने वाली राजनीति का इन्कलाब होगा। बाईस में सबके मेल-मिलाप से सकारात्मक राजनीति का मेला होबेः भाजपा की ऐतिहासिक हार होगी।* कुल मिलाकर स्वामी प्रसाद मौर्य का सपा में स्वागत करने के साथ जिस तरह अखिलेश यादव ने सामाजिक न्याय के प्रति प्रतिबद्धता दिखाया, उससे लगा चुनाव 85 बनाम 15 पर केन्द्रित होने जा रहा है, जिसमे सपा की सम्भावना बेहतर होगी। किन्तु स्वामी प्रसाद के सपा से जुड़ने के कुछ दिन बाद ही अखिलेश यादव सामाजिक न्याय के मुद्दे से पीछा छुड़ाकर पुराने ढर्रे पर लौट आये। हद तो तब हो गयी जब जनवरी बीतते-बीतते वह सत्ता में आने पर मंदिरों में नियुक्त ब्राह्मण पुजारियों को मानदेय देने तथा ब्राह्मणों पर दायर मुकदमें वापस लेने की घोषणा करने लगे।

अखिलेश यादव ने मानो भाजपा को जीताने की सुपारी ले रखी हो!

पुराने ढर्रे पर लौटते हुए अखिलेश यादव ने भाजपा को शिकस्त देने वाले अमोघ अस्त्र : सामाजिक न्याय से जो दूरी बनाना शुरू किया, उसका सही प्रतिबिम्बन 8 फ़रवरी को जारी सपा के घोषणापत्र में हुआ, जिसमें सामाजिक न्याय से जुड़ा एक भी पैरा न देखकर लोग अनुमान लगा लिए कि 2014, 2017 और 2019 की भांति अखिलेश एक बार फिर सामाजिक न्याय से दूरी बनाने जा रहे हैं। इस पर सामाजिक अन्यायमुक्त भारत निर्माण का सपना देने में व्यर्थः अखिलेश यादव शीर्षक से मेरा लेख 10 फ़रवरी के अख़बारों में प्रकाशित हुआ, जिसके उपसंहार में मैंने लिखा, *उन्होंने एक ऐसा घोषणापत्र जारी किया है, जिसे देखकर लगता है मानों उन्होंने भाजपा को जीताने की सुपारी ले रखी है!'* बहरहाल 2024 के लोकसभा चुनाव पूर्व 10 फ़रवरी से 7 मार्च, 2022 तक चले सर्वाधिक महत्वपूर्ण चुनाव : यूपी विधानसभा

चुनाव में बहुजनवादी दलों ने जिस तरह लड़ाई लड़ी उसके आधार पर मैंने 6 मार्च को *खांटी भाजपा विरोधी के रूप में उत्तीर्ण होने में व्यर्थः यूपी के गैर-भाजपाई दल* शीर्षक से प्रकाशित अपने लेख में खुली घोषणा कर दिया था कि जिन मुद्दों के साथ ये पार्टियाँ भाजपा जैसी विश्व की सबसे शक्तिशाली पार्टी के खिलाफ उतरी हैं, ऐसा लगता है इन पार्टियों ने महज चुनाव में उतरने की औपचारिकता पूरा किया है। इन्होंने भाजपा की सवर्णपरस्त नीतियों के शिकार लोगों के समक्ष ऐसा कोई सपना नहीं दिया, जिसकी जोर से वे भाजपा से पार पा सकें! और जब 10 मार्च को चुनाव परिणाम आया, देखा गया कि वे भाजपा से पार पाने में बुरी तरह विफल रही हैं।

आघातजनक रहा चुनाव परिणाम

यूपी विधानसभा चुनाव परिणाम यूँ तो सभी गैर-भाजपाई दलों के लिए बड़ा आघातजनक रहा, किन्तु इससे जिस पार्टी के वजूद पर संकट खड़ा हुआ, वह और कोई नहीं बसपा रही, जिसे सिर्फ एक सीट से संतोष करना पड़ा! वास्तव में 2022 में जैसी हार का सामना बसपा को करना पड़ा है, शायद वह स्वाधीन भारत के इतिहास की अनोखी घटना है। क्योंकि जिस पार्टी से लोग भारत पर शासन करने की उम्मीद पाले हुए थे; जो पार्टी देश के राजनीति की दिशा तय करने वाले उत्तर प्रदेश में चार बार सत्ता संभाली हो, उसकी शर्मनाक पराजय के बाद तमाम राजनीतिक विश्लेषक कहने लगे कि यदि मायावती ने अपनी रणनीति व कार्यशैली में व्यापक बदलाव नहीं लाया तो बसपा अतीत का विषय बनकर रह जाएगी। हालांकि सपा जरुर 2017 के मुकाबले तीन गुना बेहतर प्रदर्शन की, लेकिन उसका भी परिणाम निराशाजनक ही कहा जायेगा। क्योंकि सपा के अध्यक्ष अखिलेश यादव पर भाजपा को रोकने की खास जिम्मेवारी थी, पर, वह लक्ष्य से बहुत दूर रह गए। मायावती जी ने जिस तरह 2019 के लोकसभा चुनाव के बाद दुनिया को विस्मित करते हुए सपा से अकारण गठबंधन तोडा था, उसी दिन बहुजनों को लग गया कि यह सब 2022 में भाजपा की राह आसान करने के मकसद से किया जा रहा है। मायावती द्वारा अकारण गठबंधन तोड़ते ही पूरे दलित समाज की सहानुभति अखिलेश यादव की ओर शिफ्ट हो गयी। उसी का परिणाम था कि बसपा से निराश भारी संख्यक दलितों ने सपा को वोट किया। किन्तु अखिलेश यादव ने मायावती से निराश उस दलित समाज को अपनी खींचने का वैसा बलिष्ठ प्रयास नहीं किया, जो दलित समाज भाजपा को सत्ता से बाहर करने के लिए मायावती द्वारा गठबंधन तोड़ने के बाद सपा से जुड़ने का मन बना लिया था। दलित समाज के जागरूक लोग यह चाहते थे कि चुनाव के दौरान अखिलेश यादव एक बार मायावती द्वारा शुरू किये गए ठेकों में आरक्षण के खात्मे तथा संसद में सपा के सांसद द्वारा प्रमोशन में आरक्षण का बिल फाड़ने के लिए खेद प्रकट कर संकेत दें कि वह सामाजिक न्याय की ओर वापसी कर चुके हैं, किन्तु

अखिलेश यादव ने वैसा नहीं किया। यदि ऐसा करते तो शर्तिया तौर पर और भारी संख्या में दलित तथा सामाजिक न्याय समर्थक और भारी संख्या में सपा की ओर मुड़ते और चुनाव परिणाम चौकाने वाला होता।

जरूरी है बसपा और सपा का विकल्प ढूँढना

बहरहाल बहुजन नजरिये से यूपी विधानसभा चुनाव का जो बेहद हताशाजनक परिणाम आया उस पर 'जरुरी है बसपा और सपा का विकल्प ढूँढना' शीर्षक से लेख लिखकर यह सन्देश देने के लिए बाध्य होना पड़ा। *मायावती जी के साथ अखिलेश यादव को भी सामाजिक न्याय के ट्रैक पर लाना असंभव है, इसकी सत्योपलब्धि बहुजन बुद्धिजीवी व एक्टिविस्ट जितनी जल्दी कर लें, देश और वंचित बहुजन समाज के हित में उतना ही बेहतर होगा। इनकी कमियों के कारण आज भाजपा 2025 में हिन्दू राष्ट्र की घोषणा करने की स्थिति में आ गयी है। अब समय आ गया है कि यूपी के बहुजन मायावती और अखिलेश का विकल्प ढूंढने में लग जाएं! हालांकि विकल्प खड़ा करना बहुत, बहुत और बहुत ही कठिन है, पर नामुमकिन तो नहीं है! विकल्प खड़ा करने का एक यह सुफल हो सकता कि अपना सही विकल्प उभरते देख खुद का वजूद बचाने के लिए ये सामाजिक न्याय के ट्रैक पर वापस आ जाएं। अभी कोई विकल्प नहीं होने के वजह से सवर्णों को खुश करने के लिए सपा-बसपा सामाजिक न्याय से दूरी बनाएं हुए हैं। लेकिन सॉलिड विकल्प मिलने पर ये बहुजन हित को तरजीह देने के लिए बाध्य होंगी। ऐसे में इनका विकल्प ढूंढना, खुद इनके हित में भी बेहतर होगा! अब जहाँ तक विकल्प का सवाल है, आज भी कई बहुजनवादी पार्टियाँ खुद को इनका विकल्प बनाने में लगी हुई हैं। किन्तु विकल्प के रूप में उभरने का प्रयास कर रही पार्टियों में शायद ऐसा कुछ नहीं जो इन्हें बदलने के लिए मजबूर कर दे। इसलिए ऐसी किसी पार्टी को सामने आना होगा जिसका एजेंडा उग्र सामाजिक न्याय हो, जो इन्हें बदलने के लिए मजबूर कर दे। सपा- बसपा के पास आज भी विशाल मतदाता वर्ग है, जो भाजपा को उखाड़ने में प्रभावी रोल अदा कर सकता है। लेकिन मतदाता वर्ग तभी प्रभावी भूमिका अदा करने का मन बनाएगा जब ये शक्ति के समस्त स्रोतों में भागीदारी दिलाने का सपना दे। लेकिन सामाजिक न्याय से दूरी बना चुकी सपा-बसपा तभी ऐसे एजेंडे पर वापसी का मन बनायेंगी, जब कोई पार्टी शक्ति के स्रोतों में हिस्सेदारी दिलाने का सॉलिड नक्शा पेश कर इनके वोटरों को अपनी ओर खींचने लगे। ऐसे में सपा- बसपा के सच्चे हितैषियों के लिए जरुरी है कि एक ठोस विकल्प वाली पार्टी खड़ा करने में अपने प्रभाव का इस्तेमाल करें।*

2017 की भांति ही चुनाव परिणाम का किया संकेत

बहरहाल 10 मार्च को जो यूपी विधानसभा का चुनाव परिणाम आया संकेत मैंने पहले

ही कर दिया था और ऐसा नहीं कि पहली बार ऐसा किया, पिछले यूपी विधानसभा चुनावः 2017 में भी भूरि-भूरि लेखन करने के बाद, चुनाव परिणाम होगा क्या होगा, इसका स्पष्ट संकेत कर दिया था। यूपी विधानसभा चुनाव 2022 में मैंने जिस तरह अखिलेश यादव की सपा के पक्ष में जमकर लेखन किया, कुछ वैसा ही 2017 में मायावती की बसपा के पक्ष में किया था। 2017 के यूपी विधानसभा चुनाव में मैंने बसपा के पक्ष में इतना लेखन किया कि एक किताब ही बन गयी। खैर! चुनाव ख़त्म होने के बाद जब एग्जिट पोल टीवी पर दिखाया जा रहा था मैंने फेसबुक पर ये पोस्ट डाले। *बहुजनों का खेल ख़त्म! शीर्षक पोस्ट में लिखा—'सवा-डेढ़ घंटे से चल रहे एग्जिट पोल के नतीजे 11 तारीख को आने वाले चुनाव परिणाम के प्रायः 80-90% करीब है। अगर आप चमत्कार में विश्वास करते हैं तो ही अपने अनुकूल परिणाम के प्रति आशावादी हो सकते हैं। अगर नहीं करते और आप यथार्थवादी हैं तो यह मानसिकता बना लीजिये कि 5 राज्यों के इस चुनाव के बाद सवर्णवादी सत्ता नए सिरे से मजबूत होने जा रही है। यूपी में अनुमान के मुताबिक़ त्रिकोणीय मुकाबला भाजपा के पक्ष में चला गया है, यह एक कठोर सचाई है, जिसका सामना करने के लिए मन बनाइये। (फेसबुक, 9 मार्च, 2017)।* पराजित मूलनिवासी समाज *के एक लेखक की ओर से हेडगेवारवादियों को अग्रिम बधाई! शीर्षक से डाले पोस्ट में लिखा-'7 अगस्त, 1990 को मंडल की रिपोर्ट प्रकाशित होने के बाद संघ परिवार की ओर से आडवाणी ने, यह कहकर कि मंडल से समाज बंट रहा है, जिस लक्ष्य को लेकर राम जन्मभूमि मुक्ति के नाम पर आजाद भारत का जो सबसे बड़ा आन्दोलन (अटल बिहारी वाजपेयी के अनुसार) चलाया, आज उसे पूर्णता मिल जाएगी। क्या लक्ष्य था संघ परिवार का? लक्ष्य था भारत की धरती पर मुकम्मल हिंदूवादी अर्थात सवर्णवादी सत्ता की स्थापना, ताकि शक्ति के समस्त स्रोतों (आर्थिक-राजनीतक-धार्मिक-शैक्षिक इत्यादि) पर सदियों से कायम सवर्ण वर्चस्व को नए सिरे से स्थापित और मंडल से हुई क्षति की भरपाई किया जा सके। कहना न होगा संघ परिवार अपने लक्ष्य से एक दिन के लिए भी विच्यूत नहीं हुआ और उसने हिन्दू धर्म-संस्कृति के उज्जवल पक्ष और मुस्लिम विद्वेष के निरंतर प्रसार के जरिये उसे हासिल कर लिया, इसका खुलासा आज मैक्सिमम 10 बजे तक हो जायेगा। पराजित मूलनिवासी समाज के एक लेखक की ओर से हेडगेवारवादियों को अग्रिम बधाई! (फेसबुक, 10 मार्च, 2017, सुबहः 7.40)। सहस्राधिक वर्षो के बाद आज होगा : मुकम्मल हिन्दू-राज! वैसे तो अंग्रेजों के जाने के बाद जिन काले अंग्रेजों के हाथ में देश की आई, दरअसल वह सदियों बाद भारत की धरती पर हिन्दू अर्थात सवर्ण-राज की शुरुआत थी। स्मरण रहे 712 में मोहम्मद बिन कासिम से भारत भूमि धीरे-धीरे इस्लाम भारत में तब्दील हुई। इस इस्लाम भारत को 23 जून 1757 से अंग्रेज-भारत में बदलने का क्रम प्लासी युद्ध से हुआ। अग्रेजों ने उस सत्ता को 15*

अगस्त, 1947 को फिर से उनको स्थान्तरित कर दिया जिनके हाथ में इस्लाम भारत की शुरुआत के पहले सत्ता थी। आज मूलनिवासी बहुजनों के भारत पर की छाती पर हिन्दुओं अर्थात सवर्णों की वह सत्ता स्थापित होगी, जिसकी तुलना आप आप 712 पूर्व के हिन्दुराज से कर सकते हैं। (फेसबुक, 10 मार्च, 2017 की सुबह चुनाव परिणामशुरू होने के आधा घंटा पहले, सुबह 8. 20)।

कहने का आशय यह है कि यूपी विधानसभा : 2022 का परिणाम कहीं से भी चौकाने वाला नहीं था। राजनीति की गहरी समझ रखने वालों को बहुत पहले से ऐसे परिणाम का आभास हो गया था। ऐसा क्यों हुआ, इस पर मेरी सबसे अच्छी टिपण्णी 6 मई के अख़बारों में प्रकाशित *2022ः सामाजिक न्याय की राजनीति का टेस्ट होना बाकी है* रही। लगभग 6000 शब्दों की इस टिपण्णी में मैंने बहुजन राजनीति के अतीत, वर्तमान और भविष्य का काफी हद तक निर्भूल आंकलन कर दिया है.बहुजन राजनीति की वर्तमान दशा से चिंतित हर किसी को यह लेख एकाधिक बार पढना चाहिए।

× × × ×

इस रात की सुबह नही!

6 मई के बाद मैंने बहुजन राजनीति पर दो खास लेख लिखे। पहला, 11 मई को प्रकाशित *बाकी है अभी : सामाजिक न्याय की निर्दिष्ट परिभाषा* और *इस रात की सुबह नहींः गुलामी के प्रतीकों की मुक्ति का आन्दोलन!* अगर भाजपा को राजनीतिक रूप से फिनिश करना है; अगर हजारों साल से शक्ति के स्रोतों से बहिष्कृत बहुजनों को उनका प्राप्य दिलाना है तो सामाजिक न्याय की राजनीति को विस्तार देना पड़ेगा। भारी अफ़सोस की बात है कि बहुजन नेता, बुद्धिजीवी और एक्टिविस्ट सामाजिक न्याय की लड़ाई तो लड़ रहे हैं, पर सामाजिक अन्याय की सही समझ के आभाव में इसको सिर्फ नौकरियों और शिक्षा में आरक्षण तक सीमित रखे हुए हैं, जबकि इसका दायरा बहुत ही विस्तृत : शक्ति के समस्त स्रोतों तक प्रसारित है। इससे अवगत कराने के लिए ही मुझे *बाकी है अभीः सामाजिक न्याय की निर्दिष्ट परिभाषा* लेख शामिल करना पड़ा। लेकिन यूपी विधानसभा चुनाव 2022 से इतर जिस सबसे लेख को पुस्तक में शामिल किया हूँ वह है इस रात की सुबह नहींः गुलामी के प्रतीकों की मुक्ति का आन्दोलन!

यह लेख बताता है कि जब 10 मई को वाराणसी के ज्ञानवापी मस्जिद परिसर में शिवलिंग मिलने की जानकारी प्रकाश में आईः देश का वातावरण प्रायः हर-हर महादेव हो गया और बाकी मुद्दे पृष्ठ में चले गए। इसके सर्वे की रिपोर्ट आने के पहले ही देश भर के हिन्दू संगठनों की ओर से मांग उठने लगी कि मुसलमान इस पर अपना दावा छोड़कर यह पवित्र मंदिर हिन्दुओं को सौंप दें। उनके इस मांग से

अतीत के दुखद अनुभव को जेहन में रखकर कुछ-कुछ मुस्लिम संगठन और बुद्धिजीवी भी उनकी मांग का समर्थन करने लगे। इस घटना को लेकर जहाँ अखिलेश यादव, मायावती इत्यादि ने गहरी चिंता व्यक्त की वहीं सेकुलर और वंचित वर्गों के बुद्धिजीवियों ने खुलकर कहा कि इसके पीछे भाजपा का भयानक मंसूबा नजर अ रहा है। फेसबुक पर धर्मवीर यादव जैसे बहुजन बुद्धिजीवी चेताते हुए लिखा—*वे तुम्हें अतीत में उलझा रहे हैं, ताकि तुम अपना भयानक भविष्य न देख सको। समाज विज्ञानी सुब्रतो चटर्जी खुलकर कह दिए गोबर पट्टी के महानुभाओं के लिए ज्ञानवापी में दूसरा अयोध्या बनाने की तैयारी है। चिंतक प्रेम कुमार मणि का मानना रहा शिव को लेकर एकबार फिर वैसा कोहराम खड़ा किया जा रहा है, जैसा तीन दशक पूर्व राम को लेकर किया गया था। कृष्ण को लेकर भी होगा।* बहरहाल ज्ञानवापी में कथित शिवलिंग मिलने के बाद जिस तरह हिन्दू संगठनों में उबाल आया है, उससे सुब्रतो चटर्जी, प्रेम कुमार मणि इत्यादि कि यह भविष्यवाणी सही होने जा रही है कि ज्ञानबापी दूसरा अयोध्या बनने जा रही है। इसमें राम जन्मभूमि मुक्ति के वे सारे तत्व हैं जिसे हवा देकर संघ का राजनीतिक संगठन भाजपा अप्रतिरोध्य बन गयी।

भाजपा ने जो अभूतपूर्व राजनीतिक सफलता अर्जित की है, उसके पृष्ठ में आम लोगों की धारणा है कि धर्मोन्माद के जरिये ही उसने सफलता का इतिहास रचा है, जो खूब गलत भी नहीं है। पर, यदि और गहराई में जाया जाय तो यह साफ नजर आएगा कि भाजपा के पितृ संगठन ने सारी पटकथा गुलामी के प्रतीकों के मुक्ति के नाम पर रची और इसका अभियान चलाने के लिए *'रामजन्मभूमि मुक्ति यज्ञ समिति'* और *धर्म स्थान मुक्ति यज्ञ समिति* जैसी कई समितियां साधु-संतों के नेतृत्व में खड़ा की। लेकिन भाजपा अयोध्या के बाद वाराणसी में ज्ञानवापी मस्जिद जैसी गुलामी के प्रतीक की मुक्ति का जो मुद्दा खड़ा करने जा रही, उसका कोई अंत नहीं है। काशी की ज्ञानवापी की भांति मथुरा के कृष्ण जन्मभूमि को लेकर भी मामला अदालत में पड़ा है। गुलामी के प्रतीक के रूप में जौनपुर की अटाला मस्जिद, अहमदाबाद की जामा मस्जिद, बंगाल के पांडुआ की अदीना मस्जिद, खजुराहों की आलम-गिरी मस्जिद जैसी अनेकों मस्जिदें संघ के लिस्ट में हैं, जिनके विषय में भाजपा का दावा है कि वे मंदिरों को ध्वस्त कर विकसित की गयी हैं। अगर मुसलमान शासकों ने असंख्य मंदिर और दरगाह खड़ा किये तो ईसाई शासकों के सौजन्य से दिल्ली में संसद तो प्रदेशों में विधानसभा भवनों सहित असंख्य भवनों, सड़कों, रेल लाइनों, देवालयों, शिक्षालयों, चिकित्सालयों और कल -कारखानों के रूप मे भारत के चप्पे-चप्पे पर गुलामी के असंख्य प्रतीक खड़े हुए। ऐसे में संघ- भाजपा गुलामी के एक प्रतीक को मुक्त करेगा तो दूसरे के मुक्ति अभियान में जुट जायेगा। इस तरह मानकर चलना पड़ेगा गुलामी के प्रतीकों के मुक्ति अभियान की रात का

Continue Your Reading Journey

This preview has ended. Access the complete library and support our mission.

Join Our Inclusive Reading Community

✓ We champion diverse voices and perspectives

✓ Your support helps amplify underrepresented authors

✓ We provide free access to educational institutions

✓ Building bridges through shared stories

✓ Creating space for all narratives to be heard

Support Our Mission

Your donation enables us to:

• Curate diverse book collections

• Support authors from marginalized communities

• Provide free resources to educators

• Maintain our accessible digital library

Visit: www.diversitymission.in

Sign the diversity pledge • Make a donation • Download full library